17 मार्च 2019, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 41, अंक : 24 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
मार्च (द्वितीय), 2019 (वीर नि.संवत्-2545) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

रजत जयंती महोत्सव संपन्न

छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ अहिंसा स्थली गोलगंज स्थित श्री आदिनाथ जिनालय का रजत जयंती समारोह श्री दिग. जैन मुमुक्षु मण्डल एवं जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 7 से 11 फरवरी तक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर ब्र. केशरीचंदजी धवल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित सम्मेदजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर आदि के साथ-साथ स्थानीय विद्वानों का भी समागम प्राप्त हुआ।

महोत्सव में श्री समयसार विधान, श्री प्रवचनसार विधान, श्री तत्त्वार्थसूत्र विधान एवं श्री रत्नत्रय विधान का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त माता-देवी चर्चा, अष्टकुमारियों-छप्पन कुमारियों के नृत्य, माता के सोलह स्वप्न, जन्म कल्याणक व तप कल्याणक पर इन्द्र सभा आदि कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। मुख्य आकर्षण के अन्तर्गत पण्डित बनारसीदासजी के जीवन पर सुन्दर नाटक का आयोजन किया गया।

चलो सूरत ! चलो सूरत !! चलो सूरत !!!

श्री वीतराग विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सूरत में

दिनांक 19 मई से 5 जून 2019

प्रशिक्षण पाइये : अपनों को पढाइये
प्रशिक्षण पाइये : बच्चों को पढाइये
आप भी आइये : औरों को भी लाइये

यदि अभी नहीं तो कब ?

क्या आप चाहते हैं कि आपके बच्चे भी आपके ही समान संस्कारी और धर्मात्मा बनें, शाकाहारी रहें, व्यसन रहित, सात्विक और गौरवशाली जीवन जीयें और कुसंगति से बचें ?

मात्र 18 दिनों में प्रशिक्षण प्राप्त करके अपने नगर में वीतराग-विज्ञान पाठशाला का संचालन कीजिये, बच्चों में धार्मिक संस्कारों का सिंचन कीजिये, उन्हें जैनधर्म का प्राथमिक ज्ञान दीजिये। यह उनके जीवन को सात्विक और वैभवशाली बनायेगा, उन्हें कुसंगति और बुरी आदतों से दूर रखेगा। (आवास एवं भोजन व्यवस्था नि:शुल्क)

पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के सत्र 2018-19 की साहित्यिक एवं खेलकूद प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 17 फरवरी को संपन्न हुआ।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदिका (अध्यक्ष-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट) एवं मुख्य अतिथि श्री इन्द्रचंदजी कटारिया (प्रसिद्ध समाजसेवी) थे। इसके अतिरिक्त डॉ. शांतिकुमारजी पाटील (उपप्राचार्य-टोडरमल महाविद्यालय), श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री), डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', श्रीमती कमला भारिल्ल, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी शास्त्री आदि महानुभाव भी मंचासीन थे।

इस अवसर पर सभी साहित्यिक व खेलकूद प्रतियोगिताओं में स्थान प्राप्त छात्रों को पुरस्कार राशि, प्रमाण पत्र एवं ट्रॉफी प्रदान की गई। सभी साहित्यिक प्रतियोगिताओं में विशिष्ट प्रदर्शन हेतु समर्थ जैन विदिशा (शास्त्री द्वितीय वर्ष) एवं यश जैन खुरई (उपाध्याय वरिष्ठ) को **आचार्य अमृतचन्द्र पुरस्कार** दिया गया। साथ ही खेलकूद प्रतियोगिताओं में विशिष्ट प्रदर्शन हेतु आयुष जैन पिपरिया (शास्त्री द्वितीय वर्ष) को **पण्डित टोडरमल पुरस्कार** एवं नये आगंतुक छात्रों में विशिष्ट प्रदर्शन हेतु यश रत्तु बेलगांव को **उभरता सितारा पुरस्कार** दिया गया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण रजत जैन कापरेन (शास्त्री तृतीय वर्ष), संचालन अनुभव जैन खनियांधाना (शास्त्री तृतीय वर्ष) एवं आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

सीनियर सिटिजन शिविर संपन्न

चैतन्यधाम (गुज.) : यहाँ दिनांक 1 से 5 मार्च तक तृतीय सीनियर सिटिजन स्वाध्याय शिविर सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित चेतनभाई राजकोट, पण्डित दीपकभाई कोटडिया, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित देवेन्द्रभाई हिम्मतनगर, पण्डित सचिनजी शास्त्री चैतन्यधाम, पण्डित मनीषजी शास्त्री 'सिद्धांत' आदि विद्वानों द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। शिविर में लगभग 350 साधर्मियों ने लाभ लिया।

सम्पादकीय –

ऐसे क्या पाप किये?

25

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

यदि उपर्युक्त प्रश्न को हम पण्डित टोडरमल के प्रस्तुत कथन के संदर्भ में देखें तो उस कुत्ते को न केवल णमोकार मंत्र के शब्द कान में पड़ने से स्वर्ग की प्राप्ति हुई; बल्कि उस समय उसकी कषायें भी मंद रहीं होंगी, परिणाम विशुद्ध रहे होंगे, निश्चित ही वह जीव अपने पूर्वभवों में धार्मिक संस्कारों से युक्त रहा होगा। परन्तु प्रथमानुयोग की शैली के अनुसार णमोकार महामंत्र द्वारा पंचपरमेष्ठी के स्मरण कराने की प्रेरणा देने के प्रयोजन से उसकी स्वर्ग प्राप्ति को णमोकार मंत्र श्रवण का फल निरूपित किया गया है, जो सर्वथा उचित ही है और प्रयोजन की दृष्टि से पूर्ण सत्य है। जिनवाणी के सभी कथन शब्दार्थ की मुख्यता से नहीं, वरन् भावार्थ या अभिप्राय की मुख्यता से किए जाते हैं। अतः शब्द म्लेछ न होकर उनका अभिप्राय ग्रहण करना चाहिए, अभिधेयार्थ ही ग्रहण करना चाहिए।

यद्यपि लोकदृष्टि से लोक विरुद्ध होने से तत्त्वज्ञानियों के भी आंशिक राग का सद्भाव होने से तथा चिर वियोग का प्रसंग होने से मृत्यु को अन्य उत्सवों की भाँति खुशियों के रूप में तो नहीं मनाया जा सकता; पर तत्त्वज्ञानियों द्वारा विवेक के स्तर पर राग से ऊपर उठकर मृत्यु को अमृत महोत्सव जैसा महसूस तो किया ही जा सकता है।

संन्यास समाधि व सल्लेखना –

यद्यपि सन्यास, समाधि व सल्लेखना एक पर्याय के रूप में ही प्रसिद्ध हैं; परन्तु सन्यास समाधि की पृष्ठभूमि है, पात्रता है। सन्यास संसार, शरीर व भोगों से विरक्तता है और समाधि समताभाव रूप कषाय रहित शान्त परिणामों का नाम है तथा सल्लेखना जैनदर्शन का पारिभाषिक शब्द है, जो दो शब्दों से मिलकर बना है। सत् + लेखना = सल्लेखना। इसका अर्थ होता है – सम्यक् प्रकार से काय एवं कषायों को कृश करना।

जब उपसर्ग, दुर्भिक्ष, बुढ़ापा अथवा असाध्य रोग आदि कोई ऐसी अनिवार्य परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है, जिसके कारण धर्म की साधना संभव न रहे तो आत्मा के आश्रय से कषायों को कृश करते हुए अनशनादि तपों द्वारा काय को भी कृश करके धर्म रक्षार्थ मरण को वरण करने का नाम सल्लेखना है। इसे ही मृत्यु महोत्सव भी कहते हैं।

धर्म आराधक उपर्युक्त परिस्थिति में प्रीतिपूर्वक प्रसन्न चित्त से बाह्य में शरीरादि संयोगों को एवं अन्तरंग में राग-द्वेष आदि कषायभावों को क्रमशः कम करते हुए परिणामों में शुद्धि की वृद्धि के साथ शरीर का परित्याग करता है। बस यही सल्लेखना का संक्षिप्त स्वरूप है।

समाधि की व्याख्या करते हुए शास्त्रों में कहा गया है कि 'समरसी भावः समाधिः' समरसी भावों का नाम समाधि है। समाधि में त्रिगुप्ति की प्रधानता होने से समस्त विकल्पों का नाश होना मुख्य है।

सल्लेखना में जहाँ काय व कषाय कृश करना मुख्य है, वहीं समाधि में निजशुद्धात्म स्वरूप का ध्यान प्रमुख है। स्थूलरूप तीनों एक होते हुए भी साधन-साध्य की दृष्टि से सन्यास समाधि का साधन है और समाधि सल्लेखना का; क्योंकि सन्यास बिना समाधि संभव नहीं और समाधि बिना सल्लेखना-कषायों का कृश होना संभव नहीं होता। **(क्रमशः)**

औरंगाबाद में अनुकरणीय विवाह

जैन समाज के प्रखर वक्ता , अध्यात्म मनीषी डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के दोहिते **चि. आराध्य टडैया शास्त्री** सुपुत्र डॉ. शुद्धात्मप्रभा-अविनाशकुमार टडैया, मुम्बई का शुभविवाह **सौ. डॉ. प्रीति पाटनी** सुपौत्री समाजसेवी व लेखक एम.सी. जैन सुपुत्री डॉ. स्नेहल-डॉ. राजेश पाटनी, औरंगाबाद के साथ दिनांक 3 मार्च 2019 को संपन्न हुआ। जैन विधि विधान के साथ शास्त्रों की साक्षी में संपन्न यह विवाह समाज के लिये आदर्श कहा जा सकता है।

इस विवाह समारोह में देव-शास्त्र-गुरु पूजन, 24 तीर्थंकर विधान, विदुषी स्वानुभूति का प्रवचन उल्लेखनीय रहा एवं उपस्थित सभी महानुभावों को कुल 50 हजार रुपये का सत्साहित्य भेंट स्वरूप प्रदान किया गया।

इस अवसर पर जैनपथप्रदर्शक हेतु 2100/- प्राप्त हुये; टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

हार्दिक बधाई

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक **सचिनजी शास्त्री भगवां** का चयन दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड में संस्कृत टीजीटी के पद पर हुआ है।

इस उपलक्ष्य में टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

पधारिये! **॥ अपूर्व अवसर॥** तत्त्वज्ञान का लाभ लीजिये!!!

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित एवं निजात्मकल्याण आध्यात्मिक शिविर समिति द्वारा आयोजित

53वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

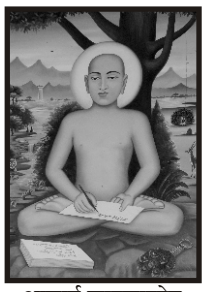

आचार्य कुन्दकुन्ददेव

रविवार, दिनांक 19 मई 2019 से बुधवार, 5 जून 2019 तक

अग्रिम आमंत्रण पत्रिका

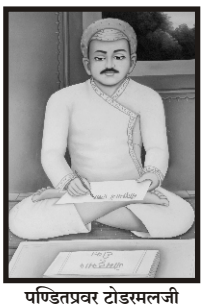

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

अध्यात्मप्रेमी बन्धुवर,

आपको यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता होगी कि 53वाँ श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष हीरा एवं वस्त्र नगरी सूरत (गुज.) में रविवार, दिनांक 19 मई 2019 से बुधवार, दिनांक 5 जून, 2019 तक अनेकानेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।

जिनधर्म प्रभावना का यह एक महान लोकोत्तर अनुष्ठान है कि जिसमें कोमलमति बालकों एवं युवाओं को जैनधर्म के मूलभूत सिद्धान्तों का ज्ञान कराया जायेगा। छात्र पाठशाला में पढाने योग्य अध्यापक बन सकें, इसलिये प्रशिक्षणार्थियों को सुयोग्य प्रशिक्षकों द्वारा प्रयोगात्मक पद्धति और मनोवैज्ञानिक शिक्षण विधियाँ सिखाई जायेंगी एवं इसका प्रायोगिक प्रशिक्षण भी दिया जायेगा। शिविर में विद्वानों के प्रवचनों, व्याख्यानमाला एवं प्रौढ कक्षाओं का भी आयोजन किया जायेगा।

इस अवसर पर देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी सूरत, डॉ.संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित शैलेषभाई तलोद आदि अनेक विद्वानों द्वारा प्रवचनों, प्रौढ कक्षाओं, व्याख्यानमाला, तत्त्वचर्चा आदि के माध्यम से लाभ प्राप्त होगा।

विशेषताएं :- ● आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचनों का प्रसारण। ● डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना आदि अनेक विद्वानों के प्रवचन, कक्षाओं का भरपूर लाभ। ● पाठशाला के अध्यापकों को अध्यापन हेतु विशेष प्रशिक्षण। ● देशभर के अलग-अलग प्रान्तों से पधार रहे साधर्मीजनों का मेला। ● श्री टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु अपूर्व अवसर। ● बालकों हेतु डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा विशेष कक्षायें।

शिविर के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता

श्रीमान् धर्मचंदजी दीवान एवं श्राविकारत्न श्रीमती कंचनदेवी की स्मृति में
सुपुत्र विद्याप्रकाश-संजय-अजय दीवान सुपौत्र विजय-अरिहंत, तीर्थेश-मोक्षा एवं समस्त दीवान परिवार सीकर-सूरत

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

कार्यक्रम स्थल :- दयालजी आश्रम, मजुरा गेट, सूरत (गुज.)

आवास व्यवस्था हेतु संपर्क सूत्र – धर्मेन्द्र शास्त्री (9724038436), अरुण शास्त्री (9377451008), सम्यक् जैन (9033325581)
असुविधा से बचने के लिये आवास फार्म भरकर शीघ्र भेजें। आवास फार्म भेजने की अन्तिम तिथि 30 अप्रैल है।

नोट :- ● प्रशिक्षण लेने वाले छात्र बालबोध/वीतराग विज्ञान पाठमालाओं की तैयारी करके आवें। दिनांक १९ मई को आयोजित प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को ही प्रशिक्षण में प्रवेश दिया जायेगा।

● जयपुर, कोटा, बांसवाड़ा, भोपाल एवं उदयपुर के शास्त्री विद्यालयों की प्रवेश प्रक्रिया भी इसी शिविर में पूर्ण की जाती है; अत: विद्यालयों में प्रवेशोच्छुक छात्रों को शिविर में पूरे दिन रहकर प्रशिक्षण लेना अनिवार्य है।

पद्यात्मक विचार बिन्दु

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

प्रस्तुत पदों में हमारे विचारों, आचरण और व्यवहार में पायी जाने वाली विसंगतियों की ओर ध्यान दिलाते हुए कुछ ऐसे विचार बिन्दु प्रस्तुत किये गये हैं, जिन पर यदि गंभीरतापूर्वक गहराई से विचार किया जाये तो न सिर्फ हमारी विचारधारा में आमूलचूल परिवर्तन होगा वरन् निश्चित ही हमारे कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा। विचारशील पाठकों से अपेक्षा है कि इसका लाभ अवश्य लेंगे। अगले कुछ अंकों तक यह क्रम जारी रहेगा।

परिपूर्ण हूँ मैं तो स्वयं, क्यों रिक्तता से डर गया,
पूर्णता की चाह में, आधा-अधूरा रह गया।
खुद को अधूरा मानना, प्रभु आपकी यह हार है,
पूर्णता की स्वीकृति बस, पूर्णता का द्वार है।। ३७।।

प्रत्येक पल मैं यत्न से, परद्रव्य का संचय करूँ,
रक्षित स्वयं अस्तित्व से, उसमें कहो मैं क्या करूँ।
मैं राग अपना जोड़ता, बढता रहे संसार यह,
यदि दृष्टि पर से हटा ले, तो मोक्ष तेरे द्वार है।। ३८।।

प्रत्येक कण संसार का, है सम्पति उस स्वयं की,
सम्पती माने विपति माने, मान्यता यह भ्रम भरी।
प्रत्येक कण निज में ही है, ना अन्य तक विस्तार है,
निज सीम में हर द्रव्य का, सम्पूर्णत: अधिकार है।।३९।।

जब मानता कुछ खो गया, तुम कहो उसका क्या हुआ,
निज में ही तब था अब भी है, जड़ से नहीं चेतन हुआ।
ना छला उसने भूल का तू स्वयं जिम्मेवार है,
पर ये बता परद्रव्य से, क्यों तुझे इतना प्यार है।। ४०।।

बन दान दाता तू लुटाता, निज उपयोग को संसार में,
देना या पाना है नहीं कुछ, तेरे यहाँ अधिकार में।
स्थाप ले उपयोग को तू, अब एक आत्मविचार में,
यदि सीमित रहे तू आत्म में, तो आतमा अविकार है।।४१।।

संयोग का न वियोग होता, वियोग का संयोग ना,
हैं सब स्वयं से स्वयं में, कोई किसी का कब बना।
संयोग और वियोग तो बस, कल्पना कुविचार है,
स्वकाल में स्वक्षेत्र में, हर द्रव्य का विस्तार है।। ४२।।

जो है अवस्तु वस्तु ना, उस संयोग और वियोग से,
आहत है कितना दीन तू, मात्र अपने रोग से।
ये मिथ्यात्व नामा रोग भी, वस्तु नहीं ये विचार है,
दृष्टि बदलना मात्र ही, मिथ्यात्व का संहार है।। ४३।।

दर्शन करे जिनदेव का, शृंगार कर तू बहु विधी,
उनका तो वैभव गुण अनंते, क्या काम की जग की निधि।
शृंगार का गुणगान क्या, जिनदेव का सत्कार है,
शृंगार उसको चाहिये जिसे निज रूप अस्वीकार है।।४४।।

पूजा नहीं उपसर्ग है, जिनदेव को शृंगारना,
घात है नि:रागता का, है राग की स्थापना।
जिस राग से शृंगार हो, वह राग ही जब ध्वस्त है,
ये अन्तर्मुखी परमात्मा, स्वरूप में ही व्यस्त हैं।। ४५।।

कर्तापना-धर्तापना अरु राग औ शृंगार जो,
हैं विकृति ये सब हमारी, साक्षात् है संसार जो।
उस रूप की भगवान में, स्थापना अविचार है,
धारण करे तू रूप उनका, यह दरश का उपहार है।।४६।।

शृंगार कर भगवान का किस रूप का दर्शन करे,
शृंगार यदि आदर्श है तो, फिर संयमी क्यों ना करे।
यदि मानता तू शृंगार ही, भगवान का सत्कार है,
तो जाना नहीं भगवान को, बस देह से ही प्यार है।।४७।।

खुद का करे शृंगार या शृंगार की हो भावना,
यह देह की आसक्ति है, पर देह कब किसका बना।
शृंगार खुद का त्यागता तब, क्यों देव का शृंगार है,
जो त्यागकर वे जिन हुए, उन पर थोपना अविचार है।।४८।।

(क्रमश:)

चलो सूरत! चलो सूरत!! चलो सूरत!!!

श्री वीतराग विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर

रविवार, दिनांक 19 मई से बुधवार, 5 जून 2019

के अवसर पर

विगत 41 वर्षों से कार्यरत जैन समाज का अग्रणीय संस्थान

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में

प्रवेश पाने का स्वर्णिम अवसर

योग्यता : किसी भी बोर्ड से दसवीं कक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण।

विशेषताएं

- डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल और पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के सानिध्य में रहकर 5 वर्षों तक जैनदर्शन का तलस्पर्शी मर्म समझने का स्वर्णिम अवसर।
- मात्र 5 वर्ष में जैनधर्म के आधिकारिक विद्वान बनें।
- स्वयं स्वाध्याय कर आत्मकल्याण करें, समाज को आत्म–कल्याणकारी धर्म के मार्ग पर लगायें।
- सरकारी मान्यता प्राप्त स्नातक डिग्री (''शास्त्री'' BA के समकक्ष)।
- आगे उच्च (सर्वोच्च) शिक्षा प्राप्त करने के अवसर उपलब्ध।
- शिक्षण के क्षेत्र में सुनहरे अवसर।
- सम्पूर्ण 5 वर्ष तक आवास एवं भोजन नि:शुल्क।
- अब तक लगभग 800 स्नातक, सभी उच्च पदस्थ।
- विशाल शिक्षण संस्थानों के संचालन में रत।
- विश्वविद्यालय, कॉलेज और स्कूलों में प्रोफेसर, लेक्चरर और शिक्षक पदों पर कार्यरत।

विशेष व्याख्यान

जयपुर (राज.) : यहाँ सांगानेर स्थित श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय में दिनांक 11 मार्च, 2019 को कॉलेज में पढ रहे शास्त्री बालक–बालिकाओं के लिये '**जैनदर्शन में नय व्यवस्था**' विषय पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर का प्रोजेक्टर के माध्यम से विशेष व्याख्यान रखा गया।

अध्यक्षता कॉलेज के पूर्व प्राचार्य डॉ. शीतलचंदजी जैन ने की। अंत में आभार प्रदर्शन कॉलेज के प्राचार्य ब्र. अनिलजी जैन ने किया। सभा का संचालन श्री शैलेषजी शास्त्री ने किया।

डॉ. भारिल्ल का विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष 2019 में भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। यह उनकी 37वीं विदेश यात्रा है। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्न स्थानों पर रहते हों, वे उन्हें सूचित कर दें। उनकी सुविधा हेतु वहाँ के फोन एवं ई–मेल दिये जा रहे हैं, जहाँ डॉ. भारिल्ल ठहरेंगे। डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. संजीवजी गोधा एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री के कार्यक्रमों का आयोजन **(JAANA)** द्वारा किया जा रहा है।

डॉ. भारिल्ल का कार्यक्रम निम्नानुसार है –

क्र.	शहर	सम्पर्क–सूत्र	दिनांक
1.	शिकागो	Anant Patni C: 214-295-8410 Falguni Gosalia R: 847-330-1088 Bipin Bhayani O: 815-939-0056	7 से 13 जून
2.	न्यूजर्सी	Neeraj Jain C: 732-910-4955 Himanshu Jain C: 732-429-0055 Rajendra Jain C: 732-589-6612	14 से 19 जून
3.	डलास	Atul Khara R : 972-8676535 O : 972-424-4902 C : 469-831-2163 Email - insty@verizon.net	20 से 27 जून
4.	लॉस एंजिल्स (जाना शिविर)	Jayshree Parekh C: 805-501-7066 Arvind Bhai (C) 562-964-3007 (H) 562-926-5040	28 जून से 3 जुलाई
5.	लॉस एंजिल्स	जैना सम्मेलन	4 से 7 जुलाई
6.	मुम्बई	श्री अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल, मोबाइल – 09821016988	7 जुलाई

डॉ.संजीवकुमारजी गोधा का विदेश कार्यक्रम

डॉ. भारिल्ल के शिष्य डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 'जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका' **(JAANA)** द्वारा धर्मप्रचारार्थ जा रहे हैं। यह उनकी धर्मप्रचारार्थ 13वीं विदेश यात्रा है। उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है–

दिनांक 31 मई से 5 जून तक **न्यूजर्सी**, 6 से 13 जून तक **मयामी**, 14 से 20 जून तक **डलास**, 21 से 28 जून तक **शिकागो**, 29 जून से 3 जुलाई तक **लॉस एन्जिल्स (JAANA), 4 से 6 जुलाई तक JAINA Convention (LA)**

पण्डित विपिनजी शास्त्री का विदेश कार्यक्रम

डॉ. भारिल्ल के शिष्य पण्डित विपिनजी शास्त्री का धर्मप्रचारार्थ नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है – दिनांक 4 से 9 जून तक **शिकागो**, 10 से 16 जून तक **डलास**, 17 से 22 जून तक **क्लीवलैण्ड**, 23 से 27 जून तक **न्यूजर्सी**, 28 जून से 6 जुलाई तक **लॉस एन्जिल्स।**

आत्मार्थी छात्रों के लिए अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करें - इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें पूरे देश के विभिन्न भागों से आये छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 860 छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 135 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं। अनेक छात्र पी.एच.डी./नेट/ जे.आर.एफ. आदि भी कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को जगद्गुरुरामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय की जैनदर्शन (त्रिवर्षीय शास्त्री स्नातक) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो पूरे देश में बी.ए. के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए. एस., कैट, मैट, जे.आर.एफ. जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं।

शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को दो वर्ष का राजस्थान शिक्षा बोर्ड का उपाध्याय परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है, जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद यदि छात्र चाहें तो दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स भी कर सकते हैं, जो (एम.ए.) के समकक्ष है।

उपाध्याय में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सेकेण्डरी (दसवीं) परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित पीयूषजी शास्त्री के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है।

सभी छात्रों को आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

नया सत्र 30 जून 2019 से प्रारंभ होगा। स्थान अत्यंत सीमित है; अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही अपना प्रार्थना-पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें।

यदि दसवीं का परीक्षाफल अभी उपलब्ध न हुआ हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं।

दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेज दें।

यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें **सूरत (गुज.) में 19 मई से 5 जून, 2019 तक** होनेवाले ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में साक्षात्कार हेतु बुलाया जायेगा, जिसमें उन्हें प्रारंभ से अन्त तक रहना अनिवार्य होगा।

- पण्डित रतनचन्द भारिल्ल (प्राचार्य)

क्यों लें महाविद्यालय में प्रवेश ?

1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का सन् 1977 से 42 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है।
2. यहाँ पूर्णत: धार्मिक परिवेश मिलता है, जिससे बालक संस्कारशील धर्मनिष्ठ बन जाते हैं।
3. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', पण्डित पीयूषजी शास्त्री आदि अनेक विद्वानों के सान्निध्य में सतत् प्रशिक्षण से जैनतत्त्वज्ञान/दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान बनते हैं।
4. जैनदर्शन के विद्वान होने से स्व के कल्याण के साथ-साथ अपने परिवार-समाज के कल्याण में निमित्त होते हैं।
5. छात्रावास में रहने से अपने हिताहित का स्वयं निर्णय करने की सामर्थ्य प्रगट होती है।
6. यहाँ विभिन्न प्रान्तों के छात्रों के साथ रहकर पूरी भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त करने का अवसर मिलता है।
7. महाविद्यालय के छात्र औसतन प्रतिवर्ष राजस्थान बोर्ड तथा विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में मैरिट में स्थान प्राप्त करते हैं।
8. संस्कृत भाषा में शास्त्री (बी.ए.) की डिग्री राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की होने से अपेक्षाकृत रोजगार के अधिक उन्नत अवसर उपलब्ध होते हैं।
9. छात्रों की वक्तृत्वशैली, तर्कशैली एवं अध्ययनशीलता का विशेष विकास होता है, जिससे छात्र सभी क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

इसप्रकार श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश पाकर आपके बालक का सर्वांगीण विकास होता है। वह अपने और अपने परिवार, समाज की उन्नति में निमित्त होता है। जैनदर्शन का विद्वान बनकर स्व-पर कल्याण के सम्पादन हेतु अग्रसर होता है।

क्या आप नहीं चाहते कि आपका बालक भी ऐसा हो ? यदि हाँ.. तो महाविद्यालय में प्रवेश हेतु बालक को **दिनांक 19 मई से 5 जून 2019 तक सूरत (गुज.)** में आयोजित शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में अवश्य भेजें।

- पण्डित शान्तिकुमार पाटील (उपप्राचार्य)

फॉर्म मंगाने का पता : - पण्डित जिनकुमार शास्त्री (अधीक्षक) (8903201674) (8072446379) श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) फोन : (0141) 2705581, 2707458; Email-ptstjaipur@yahoo.com

सूरत का पता एवं संपर्क सूत्र - दयालजी आश्रम, मजूरा गेट, सूरत (गुज.); धर्मेन्द्र शास्त्री (9724038436), अरुण शास्त्री (9377451008), सम्यक् जैन (9033325581)

जिसमें मेरा अपनापन है....

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

प्रस्तुत पद डॉ.भारिल्ल के उस समय के चिंतन के फलस्वरूप लिखे गये हैं, जब वे अत्यंत बीमारी की हालत में थे। प्रस्तुत पदों में स्वयं आत्मा को अन्य सभी परद्रव्यों और पर–आत्माओं से भिन्न बताया गया है। अन्य द्रव्य से भेदविज्ञान की अपेक्षा अन्य जीवात्माओं से भेदविज्ञान पर अधिक बल दिया है। आत्मकल्याण के इच्छुक जीवों को स्व–पर भेदविज्ञान ही करने योग्य है, जिसमें यह रचना लाभप्रद सिद्ध होगी। वैराग्य प्रवृत्ति वाले मुमुक्षु भाईयों के लाभार्थ इसे यहाँ दिया जा रहा है –

(वीर)

सामान्य आतमा तो अनन्त पर मैं तो स्वयं अकेला हूँ।
मैं हूँ अपने में स्वयं पूर्ण अन–आतम से अलबेला हूँ।।
मैं तो केवल वह आतम हूँ जिसमें मेरा अपनापन हो।
जिसमें मेरा अपनापन हो जिसमें ही मेरा सब कुछ हो।। १।।

यद्यपि अनन्तगुणधारी मैं पर–आतम का गुण एक नहीं।
यद्यपि मैं अन्य आतमा सा पर अन्य आतमा कभी नहीं।।
यद्यपि असंख्य प्रदेशी हूँ पर का प्रदेश प्रवेश नहीं।
परिणमनशील पर द्रव्यों सा पर परणति का अवशेष नहीं।। २।।

सबके समान ही गुण पर्यय सबके समान प्रदेशमयी।
सबके समान ही सबकुछ है सबके समान चैतन्यमयी।।
यद्यपि सब कुछ सबके समान पर पर से भिन्न निराला हूँ।
सब रमें निरन्तर अपने में अपने में रमनेवाला हूँ ।। ३।।

अपने में अपनापन होना अपने में ही जमना–रमना।
अपने में स्वयं समा जाना अपने में तन्मय हो जाना।।
है धर्म यही बस इसको ही तो धर्मधुरन्धर धर्म कहें।
इसको कहते हैं रत्नत्रय इसमें निज को अर्पण कर दें ।। ४।।

इसमें निज को अर्पण कर दें इसको निज का सर्वस्व गिनें।
इसको जीवन में अपना लें जीवन को बस इसमय कर दें।।
यह जीवन सच्चा जीवन है निज को इसमें अर्पण कर दें।
अब अधिक कहें क्या हे भगवन्! समभावों से अर्पण कर दें।। ५।।

शुद्धोपयोग शुधपरिणति को निश्चय रत्नत्रय कहते हैं।
अर सहचारी शुभभावों को व्यवहार रतनत्रय कहते हैं।।
तदनुकूल जड़ तन परिणति व्यवहार धर्म कहलाती है।
पर परमारथ से देखें तो वह धर्म नहीं हो सकती है ।। ६।।

अपने–अपने भावानुसार ज्ञानी के यह सब होता है।
अपने–अपने भावानुसार यह यथायोग्य फल देता है।।
पर मैं तो अपने शुद्धभाव का एकमात्र अधिनायक हूँ।
मैं ही मेरा कर्त्ता–धर्त्ता अर मैं ही मेरा ज्ञायक हूँ।। ७।।

रे मैं ही मेरा ज्ञायक हूँ अर मैं ही मेरा ध्यायक हूँ।
मैं ही मेरा हूँ ज्ञेय–ध्येय मैं ही मेरा आराधक हूँ।।
मैं ही मेरा आराधक हूँ अर मैं मेरा आराध्य अरे।
मैं तो बस केवल मैं ही हूँ और साधना–साध्य अरे।।८।।

मैं पर परमेष्ठी हूँ ही नहीं निज की परमेष्ठी पर्यायें।
भी मुझसे अन्य रूप ही हैं; क्योंकि मैं तो पर्याय नहीं।।
मैं द्रव्यरूप हूँ मूलवस्तु मेरा अपनापन मुझमें है।
मैं तो बस केवल मैं ही हूँ मैं हूँ मैं हूँ बस मैं ही हूँ।।९।।

मैं परमशुद्ध निश्चय नय का, मैं परमभावग्राही नय का।
ही विषय अनोखा अद्भुत हूँ, अर मेरे इस जीवनभर का।।
निष्कर्ष मात्र बस इतना है बस मैं ही हूँ बस मैं ही हूँ।
बस मैं ही हूँ बस मैं ही हूँ बस मैं ही हूँ बस मैं ही हूँ।।१०।।

(दोहा)

मैं तो केवल एक ही स्वयं आतमाराम।
अपने में ही नित रमूँ राम आतमाराम!।।११।।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

1 से 5 मई	देवलाली	गुरुदेव जयन्ती
19 मई से 5 जून	सूरत	प्रशिक्षण शिविर,
7 जून से 6 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ
2 से 11 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर

जन्मों के संचित पुण्य का फल : टोडरमल महाविद्यालय

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक डॉ. मनीषजी शास्त्री रहली अपने अनुभव बताते हुए लिखते हैं –

दिनांक 24 फरवरी 2019 को लखनऊ विश्वविद्यालय में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी में राजस्थान विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रोफेसर अनिलजी जैन से मिलना हुआ। डॉ. वीरसागरजी दिल्ली भी साथ में थे। बातचीत के दौरान उनके द्वारा सहज भाव से की गई कुछ टिप्पणियों ने मुझे बहुत भावुक कर दिया। हम आपस में कितनी ही अच्छी-बुरी टिप्पणियाँ कर लें, उनका उतना महत्व नहीं है, जितना कि एक दूर खड़े व्यक्ति की टिप्पणियों का है, वह भी एक ऐसा व्यक्ति जो कि एक नामचीन शख्सियत हो और निष्पक्ष हो। मैंने महसूस किया कि उन्होंने जो भी टिप्पणी की वे बड़ी सहज थी, उनमें कोई भी बनावट या जमावट नहीं थी।

प्रो. अनिलजी ने बड़ी सहजता से कहा कि जितना कुछ भी आज जैनदर्शन व साहित्य जिन्दा है, वह सब आप टोडरमल (टोडरमल स्मारक) वालों की देन है।

दूसरी बात उन्होंने यह कही कि मैंने टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों में, चाहे बड़े हों या छोटे हों, उनका आपस में जितना लगाव और प्यार देखा है, ऐसा मुझे कहीं देखने को नहीं मिला। आज के दौर में आप विद्यार्थियों का आपस का यह प्यार हकीकत में बहुत गजब है। यह बात सुनकर मेरे हृदय में हर्ष के आंसू बह रहे थे। मैंने जैसे-तैसे अपनी आंखों को संभाला। उनकी टिप्पणियों से छोटे दादा, बड़े दादा, अन्नाजी, शांतिजी आदि सबकी और पूरे महाविद्यालय की दिव्य छवि मेरे मानस में उतर गई।

किसी तीसरे व्यक्ति द्वारा की गई यह प्रशंसा किसी नोबेल पुरस्कार से कम नहीं थी। मैं आनन्द और बहुमान से भर गया। हमारे महाविद्यालय और हमारे गुरुओं के प्रति अनायास ही किसी के द्वारा की गई ऐसी सरल टिप्पणी से इतना अभीभूत हूँ कि शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। किन्हीं शब्दों में मेरी उस भावभूमि को झेलने की क्षमता नहीं दिखती। श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर के होने का सौभाग्य न जाने कितने जन्मों के संचित पुण्य का फल है। मेरे इस सौभाग्य के समक्ष चक्रवर्ती का पुण्य भी फीका नजर आ रहा है।

मैं अपने सौभाग्य पर इतरा ही रहा था कि उन्होंने एक और भी बात कही कि स्मारक का जो भी विद्यार्थी मेरे विभाग में पढने आता था वह सारे विभाग में बिलकुल अलग दिखता था। उसका व्यक्तित्व बिलकुल अलग होता था। उनमें इतनी विनम्रता और प्रतिभा होती थी कि मैं स्वयं बहुत प्रभावित था।

मेरा मन हुआ कि मैं सभी अनुज व अग्रजों से ये अहसास सांझा करूँ। जो आनंद की अनुभूति मुझे हुई, आशा है आपको भी होगी; क्योंकि सरल हृदय से की गई यह प्रशंसा मेरी नहीं थी, हमारे महाविद्यालय की थी, हमारे गुरुजनों की थी, हमारे महाविद्यालय के संस्कारों व उद्देश्यों की थी। मेरे गुरुजनों की थी। जब प्रोफेसर अनिलजी जैसे लोगों से महाविद्यालय और महाविद्यालय के विद्यार्थियों की सच्ची प्रशंसा सुनता हूँ तो सच में हौसला बढता है और इस विषम काल में ऐसी प्रशंसाओं से स्फूर्ति आती है। काश ऐसी निष्पक्ष दृष्टि उन लोगों की भी हो जाये जो स्मारक के प्रति दुर्भावना रखते हैं। इस पूरी बातचीत का प्रत्यक्ष आनंद भाईसाहब डॉ. वीरसागरजी दिल्ली ने भी लिया। ●

प्रकाशन तिथि : 13 मार्च 2019

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा,** एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com